पाठ के बारे में

कवि ने बताया है की उसके स्वभाव मे नीली पंखोवाली एक छोटी चिड़िया है। वह संतोषी है, अन्न से बहुत प्यार करती है, वह अपनेपन के साथ कंठ खोल-कर पुराने घने वन मे बेरोक गाती है, मुहबोली है, एकांत मे भी उमंग से रहती है। वह उफनती नदी के विषय में जानकर भी जल की मोती-सी बूँदों को चोंच में भर लाती है। उसे स्वंय पर गर्व है। वह साहसी है। उसे नदी से लगाव है। कवि ने अपने भीतर की कल्पित चिड़िया के माध्यम से मनुष्य के महत्त्वपूर्ण गुणों को उजागर किया है।

Scanned by TapScanner

Date
Page

पाठ - 1 वह चिड़िया जो

प्रश्नोत्तर :-

प्र.1 → कविता पढ़कर तुम्हारे मन में चिड़िया का जो चित्र उभरता है उस चित्र को बनाओ।

Scanned by TapScanner

प्र.२ तुम्हें कविता का कोई और शीर्षक देना हो तो क्या शीर्षक देना चाहोगे? उपयुक्त शीर्षक सोचकर लिखो।

उ.२ → इस कविता का दूसरा शीर्षक नीले पंखो वाली चिड़िया/ मुँहबोली चिड़िया / संतोषी चिड़िया / ~~मस्त~~ गर्वीली चिड़िया हो सकता है।

प्र.३ इस कविता के आधार पर बताओ की चिड़िया को किन-किन चीज़ो से प्यार है?

उ.३ इस कविता के आधार पर चिड़िया को अन्न, विजन और नदी से ~~प~~ प्यार है।

प्र.४ आशय स्पष्ट करो -

(क) रस उँडेलकर ~~गा~~ लेती है।

आशय → नीले पंखो वाली चिड़िया मधुर

स्वर में गाती है।

(ख) चढ़ी नदी का दिल टटोलकर
जल का मोती ले जाती है

आशय।→ तूफानी एवं लहराती
नदी का सामना करते हुए
मोती जैसे अनमोल जल को
वह एक चिड़िया ग्रहण करती है।

* इस कविता के कवि
कौन हैं?
उ. केदारनाथ अग्रवाल

Scanned by TapScanner

पाठ २ - बचपन -

प्रश्नोत्तर

प्र.1 लेखिका बचपन में इतवार की सुबह क्या-क्या काम करती थी?

उ.1 लेखिका बचपन में इतवार की सुबह अपने जूतों को पॉलिश करती थी तथा अपने मोज़े खुद धोती थी।

प्र.2 तुम्हें बताऊँगी कि हमारे समय और तुम्हारी समय में कितनी दूरी हो चुकी इस बात के लिए लेखिका क्या-क्या उदाहरण देती है?

उ.2 तुम्हें बताऊँगी कि हमारे समय और तुम्हारे समय में कितनी दूरी हो चुकी है-' यह कहकर लेखिका एक ओर जहाँ बच्चों के पहनावे, खान-पान, शौक और आदतो में आए बदलाव की चर्चा करती है वहीं दूसरी ओर विभिन्न वैज्ञानिक आविष्कारों के आने से आधुनिक और प्राचीन

(तत्कालीन) जीवन शैली में तुलना भी करती है। उदाहरण के लिए ग्रामोफोन की जगह T.V., कुल्फी की जगह आइसक्रीम एवं समोसा की जगह पैटीज ने ले लिया है।

प्र.3 लेखिका को चश्मा क्यों लगाना पड़ा? चश्मा लगाने पर उनके चचेरे भाई उन्हें क्या कहकर चिढ़ाते थे?

उ. पाठ को ~~पढ़कर~~ पढ़ने पर हमें यह पता चलता है कि लेखिका रात के समय टेबल लैम्प की रोशनी में देर रात तक पढ़ाई किया करती थी, ~~शायद~~ शायद इसी कारण लेखिका को बचपन में ही चश्मा ~~चश्मा~~ लगाना पड़ा।
लेखिका के चश्मा लगाने पर उनके चचेरे भाई उन्हें लंगूर कहकर चिढ़ाते थे।

प्र.4 लेखिका अपने बचपन में कौन-कौन सी चीज़ें मज़ा ले-लेकर खाती थी उनमें प्रमुख फलों के नाम लिखो।

उ. लेखिका अपने बचपन में अनेक प्रकार की स्वादिष्ट चीज़ें खाती थी जैसे ~~फल~~ फल, कसमल मिठाइयाँ, चॉकलेट्स, शरबत, मेवे,

बेकरी उत्पाद, आइसक्रीम, इत्यादि। इसकेअलावा कचौड़ी, समोसे, लेमनेड विमटो, अनारदाने का चूर्ण चेस्टनेट एवं चनाज़ोर गरम मज़े ले लेकर खाती थी
पाठ मे लेखिका के द्वारा वर्णित प्रमुख फलों के नाम- काफल, केसमल, चेस्टनट आदि, मजे ले-लेकर खाती थी।

संस्मरण

संस्मरण से आगे -

प्र.1 लेखिका के बचपन मे हवाई जहाज़ की आवाज़ों, घुड़सवारी, ग्रामोफोन और शोरूम में शिमला-कालका ट्रेन का मॉडल ही आश्चर्यजनक आधुनिक चीज़े थी। आज क्या-क्या आश्चर्यजनक आधुनिक चीज़े तुम्हें आकर्षित करती है? उनके नाम लिखो।

उ.1 ~~और~~ मुझे विडियो कॉलिंग आकर्षित करता है क्योंकि इसके ज़रिये हमें आमने सामने अपने विचारों को प्रकट कर सकते है। मुझे टेलीविज़न भी अपनी ओर आकर्षित करता है, ऐसा इसलिए है क्योंकि अगर मैच इंगलैंड

में हो रहा है तो इसके जरिये हम घर पर बैठे-बैठे लाइव देख सकते है।

प्र.2 अपने बचपन की कोई मनमोहक घटना लिखो।

मैं और मेरा परिवार एक बार डोमदमा गए थे। हम ग्यारह बजे निकले थे एक बजे तक हम डोमदमा पहुंचे। फिर हम चलना शुरु किए, रास्ते में हम बहुत सारी तस्वीरें ली और मुझे बहुत मज़ा आया था। जब हम थोड़ा सा थके तो बैठकर जूस पिया और चल पड़े। एक घंटे बाद हम ऊपर पहुंच गए। माता दर्शन करके बहुत मज़ा आया। दर्शन करने के बाद, लौटते समय रास्ते में हमें छोटी-छोटी दुकाने दिखी और हमने वहाँ से कुछ-कुछ चीज़े खरीदी। फिर नीचे उतर कर हमने नौका विहार की और खाना खाया। और मुझे बहुत मज़ा आया। यही था मेरे बचपन की मनमोहक घटना।

Date
Page

उ.1 सन 1935-40 के लगभग लेखिका का बचपन शिमला मे अधिक दिन गुज़रा। उन दिनों शिमला के कुछ घरों मे ग्रामोफोन थे। ~~शरबत~~ के चौड़ी-समोसा, लेमनेड, विमटो मिलती थी। शिमला की वेंगर्स और डेविको रेस्तरां की चॉकलेट और पेस्ट्री मज़ेदार होती थी। कन्फ़ेक्शनरी काउंटर पर तरह-तरह की पेस्ट्री और चॉकलेट मिलती थी। उन दिनो कसमल, रसभरी, काफ़ल शिमला के प्रमुख फल थे। उन दिनो चने ज़ोर गरम और अनारदाने का चूर्ण एक तिरछे लपेटे हुए कागज़ मे मिलता था जोकि आज भी चना चूर गरम के नाम से मशहूर है। उन दिनों हर बच्चे को घुड़ सवारि का मौका ~~हर बच्चे~~को

प्र.2 लेखिका ने इस संस्मरण मे सरवर के मिल माध्यम से अपनी बात बताने की कोशीश की है। लेकिन सरवर का कोई परिचय नहीं दिया हैं। अनुमान लगाओ कि सरवर कौन हो सकता है।

उ.2 इस संस्मरण मे लेखिक ने दो बार सरवर का नाम संकेत के रूप मे प्रयुक्त किया

है। इससे यह ग्यात होता है की
सरवर उनका कोई मित्र लेरवक रहा
होगा जिन्हें वह अपनी जीवनी सुना
रही है।

* इस संस्मरण कि लेखिका कौन है?
उ: कृष्णा सोबती

Scanned by TapScanner

कहानी - प्रेमचंद - (लेखक)

पाठ-3 → नादान दोस्त

प्र० अंडो के बारे मे केशव और श्यामा के मन में किस तरह के सवाल उठते थे? वे आपस मे सवाल-जवाब करके अपने दिल को तसल्ली क्यों दे दिया करते थे?

उ० अंडो के बारे मे केशव और श्यामा के मन में तरह-तरह के सवाल उठते थे। अंडे कितने बड़े होंगे? किस रंग के होंगे? कितने होंगे? उनमे से बच्चे किस तरह निकल आएगें? बच्चों के पर कैसे निकलेंगे? घोंसला कैसा है? लेकिन इन बातों का जवाब देने वाला कोई नहीं। न अम्मा को घर के काम-धंधो से फुरसत थी, न बाबू जी को पढ़ने-लिखने से। दोनो बच्चे आपस ही मे सवाल-जवाब करके अपने दिल को तसल्ली दे लिया करते थे।

प्र.2 केशव ने श्यामा से चिथड़े, टोकरी और दाना-पानी मँगाकर कार्निस पर क्यों रखे थे?

उ.2 अंडों को आराम और सुविधा देने के लिए केशव ने श्यामा से चिथड़े मंगाकर रखे थे। दूसरी ओर अंडों को छाया देने के लिए उनके ऊपर टोकरी को छाते की तरह लटकाया तथा चिड़िया और उसके बच्चों के लिए दो अलग-अलग प्यालियों में दाना-पानी रखा।

प्र.3 केशव और श्यामा ने चिड़िया के अंडों की रक्षा की या नादानी?

उ.3 केशव और श्यामा ने अपनी सहजबुद्धि का प्रयोग करते हुए चिड़िया के अंडो की रक्षा करने की एक नादानी की थी। केशव और श्यामा बच्चे होने के कारण अनुभवहीन थे। उन्हें बिल्कुल पता नहीं था कि अंडों को छूने से वे खराब हो जाएगे और फिर चिड़िया

उन्हें नहीं पालेंगी।

कहानी से आगे

प्र.१ केशव और श्यामा ने अंडो के बारे में क्या अनुमान लगाए थे? यदी तुम उस जगह होते तो क्या अनुमान लगाते और क्या करते?

उ.१ केशव और श्यामा ने अंडो के बारे मे कई अनुमान लगाए थे। जैसे अंडे कितने बड़े होंगे? किस रंग के होंगे? क्या खाते होंगे? उनमे से बच्चे किस तरह निकल आएँगें? बच्चों मे पर कैसे निकलेंगे? शायद हम इस जगह होते यही करते। पर हम केशव और श्यामा के जैसे नादानी नहीं करते / अनुमान लगाते

प्र.२ माँ के सोते ही केशव और श्यामा दोपहर में बाहर क्यों निकल आए? माँ के पूछने पर भी दोनों में से किसी ने किवाड़ खोलकर दोपहर में बाहर निकलने का कारण क्यों नहीं बताया?

उ. केशव और श्यामा दोपहर में ~~बाहर~~ अंडो की हिफ़ाज़त की तैयारियाँ करने के लिए बाहर निकल आए। माँ के पूछने पर भी दोनो ने किवाड़ ~~खोल~~ खोलकर दोपहर में बाहर आने का कारण इसलिए नहीं बताया क्योंकि उन्हें डर था की अम्मा उन्हें डाटेंगी और मारेंगी।

प्र.3 प्रेमचंद ने इस कहानी का नाम 'नादान दोस्त' दिया। तुम इस कहानी को क्या शीर्षक देना चाहोगे।

उ. हम इस ~~कहा~~ कहानी को 'नादान बच्चों' का शीर्षक देना चाहेंगे

अनुमान और कल्पना

प्र.1 इस पाठ में गर्मी के दिनों की चर्चा है। अगर सर्दी या बरसात के दिन होते तो क्या होता?

उ. अगर सर्दी के दिन होते तो हमें गरम कपड़े की व्यवस्था करनी पड़ती और वर्सात होती तो हमे कार्निस पर छतरी को

व्यवस्था करनी पड़ती। सर्दी मे ~~कम्बल~~ हमे छोटे-छोटे कम्बल के टुकड़ो की आवश्यकता होती।

प्र.2

↓ ↓ ↓

प्र.2 पाठ पढ़कर मालूम करो की दोनों चिड़िया वहाँ फिर क्यों दिखाई नहीं दी? वे

उ.2 दोनो चिड़िया वहाँ फिर कभी नहीं दिखाई दी क्योंकि केशव और श्यामा की नादानी की वजह से उन्हे अपने अंडो को ~~म~~ गिराना पड़ा था। इसलिए वे किसी दूसरी जगह चली गई।

Scanned by TapScanner

पाठ-1 भाषा और व्याकरण

परिभाषा: भाषा वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम परस्पर बोलकर या लिखकर अपने भावों और विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।

भाषा के रूप

लिखित ⟷ मौखिक

→ **मौखिक भाषा** (Oral)

अपने सामने उपस्थित व्यक्ति से किया जाने वाला परस्पर वार्तालाप मौखिक भाषा का रूप है। जैसे - बातचीत, वाद-विवाद, भाषण, कोई घटना या कहानी सुनाना आदि।

→ **लिखित भाषा** (Written)

अपने भावों या विचारों को लिख कर प्रकट करना भाषा का लिखित रूप कहलाता है। जैसे - पत्र, लेख, कहानी, यात्रा-विवरण, घटना-वर्णन आदि।

लिखित भाषा में प्रकट किए गए भाव या विचार अनंत काल तक सुरक्षित रखे जा सकते हैं।

Scanned by TapScanner

व्याकरण किसलिए पढ़े?

व्याकरण से हम भाषा को शुद्ध रूप में बोलने और लिखने के नियम सीखते हैं, क्योंकि केवल 'शब्द' ही भाषा नहीं होते, उनका स्थितियों के अनुरूप ठीक-ठीक प्रयोग करना ही भाषा है।

अर्थात -:
व्याकरण को भली प्रकार समझकर ही हम भाषा को ~~भाषा~~ ठीक-ठीक बोलना और लिखना अथवा उसका व्यवहार करना सीखते हैं।

व्याकरण भाषा के निम्नलिखित अंगो ~~का विस्तार से अध्ययन करेंगे।~~ विचार करता है:

वर्ण | शब्द | वाक्य

10.4.1

पाठ-1 - भाषा और व्याकरण

प्रश्न-1 सही कथन के सामने सही का चिह्न (✓) और ग़लत कथन के सामने ग़लत का चिह्न (X) लगाइए-

(1) भाषा भावों और विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम है। [✓]

(2) संकेतों से भी विचारों का पूर्ण आदान-प्रदान हो जाता है। [X]

(3) मौखिक भाषा का व्यवहार आमने-सामने उपस्थित लोगों में ही होता है।

[✓] X

(4) लिखित भाषा में प्रकट किए गए भावों अथवा विचारों को अनंत काल तक सुरक्षित रखा जा सकता है। [✓]

(5) व्याकरण हमें भाषा का शुध्द प्रयोग करना सिखाता है। [✓]

Scanned by TapScanner

प्रश्न-2 भाषा के कितने रूप होते हैं? उदाहरण सहित समझाएँ।

उत्तर→ भाषा के रूप :
1. लिखित भाषा → बातचीत, वाद-विवाद
2. मौखिक भाषा → पत्र, लेख

प्रश्न-3 व्याकरण पढ़ने की क्या उपयोगिता है?

उत्तर→ व्याकरण से हम भाषा को शुद्ध रूप में बोलने और लिखने के नियम सीखते हैं।

प्रश्न-4 व्याकरण भाषा के किन-किन अंगो पर विचार करता है?

उत्तर→ 1. वर्ण
2. शब्द
3. वाक्य

प्रश्न-5 लिखित भाषा की क्या उपयोगिता है?

उत्तर→ लिखित भाषा में प्रकट किए गए भावों अथवा विचारों को अनंतकाल

तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

प्रश्न-6 निम्नलिखित का प्रयोग मौखिक भाषा द्वारा होता है अथवा लिखित द्वारा ?

(1) पत्र → लिखित
(2) निबंध → लिखित
(3) बातचीत → मौखिक
(4) भाषण → मौखिक
(5) प्रार्थना पत्र → लिखित

Scanned by TapScanner

विलोम शब्द

	शब्द	विलोम
1.	अंधकार	प्रकाश
2.	अनुकूल	प्रतिकूल
3.	आदर	निरादर
4.	आदि	अनादि
5.	आशा	निराशा
6.	आदान	प्रदान
7.	आस्तिक	नास्तिक
8.	उत्तर (दिशा)	दक्षिण
9.	उचित	अनुचित
10.	उतार	चढ़ाव
11.	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
12.	उदय	अस्त
13.	एकता	अनेकता
14.	कटु	मधुर
15.	कोमल	कठोर
16.	गहरा	उथला
17.	स्वर्ग	नरक
18.	प्रेम	घृणा
19.	चर	अचर
20.	जीवन	मरण / मृत्यु
21.	जड़	चेतन

Scanned by TapScanner

Date ____
Page ____

	शब्द	विलोम
22.	पंडित	मूर्ख
23.	देव	दानव
24.	नवीन	प्राचीन

Scanned by TapScanner

अनुच्छेद लेखन

मीठी वाणी बोलिए

महाकवि तुलसीदास ने मीठी वाणी की महिमा बताते हुए कहा है- "तुलसी मीठे वचन ते सुख उपजत चहुँ ओर"। सचमुच, मीठी भाषा बोलने वाला अपने मधुर शब्दों से दूसरों के कानों में तो घोलता ही है, अपने हृदय को भी शांत और प्रसन्न करता है। मीठी वाणी का प्रभाव तो पशु-पक्षियों पर भी पड़ता है, फिर मनुष्य के कान तो यों भी संगीत-भरी भाषा सुनने के लिए लालायित रहते हैं। संसार में ऐसा कोइ काम नहीं, जो मीठी भाषा बोलकर न कराया जा सके। ऐसा व्यक्ति अपने बिगड़ते हुए काम को सरलता से बना लेता है। प्रत्येक व्यक्ति यह भी चाहता है कि मधुरभाषी व्यक्ति उसका मित्र हो।

वर्ण- विचार

→ भाषा की छोटी-से छोटी इकाई (ध्वनि) वर्ण कहलाती है।
जैसे - अ, इ, क, घ, च आदि।

→ वर्ण की विशेषता : वर्ण को अक्षर भी कहते हैं। अक्षर का अर्थ है- एक ऐसी ध्वनि, जिसके टुकड़े न किए जा सके, जिसे घटाया न जा सके। प्रत्येक वर्ण या अक्षर को एक निश्चित चिह्न द्वारा लिखा जाता है।
भाषा जिन निश्चित चिह्नों मे लिखी जाती है, उन्हें लिपि कहते हैं। हिंदी भाषा जिस लिपि मे लिखी जाती है, उसका नाम देवनागरी है।

→ ~~वर्णन~~ वर्णमाला
कोई भी भाषा कुछ निश्चित ध्वनियों द्वारा बोली जाती है। इन ध्वनियों के कुछ निश्चित चिह्न मान लिए गए हैं। इन चिह्नों के समूह को ही उस भाषा की वर्णमाला कहते हैं।

Scanned by TapScanner

हिंदी वर्णमाला : में दो प्रकार के वर्ण हैं-

वर्ण

- स्वर
- व्यंजन

स्वर - उन ध्वनियों को कहते हैं, जिनका उच्चारण करते समय हवा, मुँह के किसी भाग (होंठ, जीभ या कंठ) की रुकावट के बिना निकल जाती है।

हिंदी-वर्णमाला मे स्वरों की संख्या ग्यारह है -

औ	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ

अं और अः का प्रयोग भी स्वरों के साथ ही होता है किंतु ये न तो स्वर हैं और न ही व्यंजन। ये अयोगवाह कहलाते हैं।

→ स्वर के भेद : स्वर के निम्नलिखित तीन भेद हैं-

1. मूल अथवा ह्रस्व स्वर : जिन स्वरों के उच्चारण में बहुत कम समय लगता है,

Scanned by TapScanner

Date ____
Page ____

उन्हें मूल अथवा ह्रस्व स्वर कहते हैं।
ये कुल चार है- अ, इ, उ, ऋ

2. दीर्घ स्वर : जिन स्वरों के उच्चारण एक मात्रा-काल से अधिक समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं।
इनकी संख्या सात है- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

3. प्लुत स्वर : जिन स्वरों के उच्चारण में मूल स्वर से लगभग तीन गुना समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। जैसे ओ३म्, हे राम।

→ अनुनासिक : किसी वर्ण का उच्चारण करते समय हवा नाक और मुँह से निकलती है तो लिखते समय उसके ऊपर चंद्रबिंदु [ँ] लगा दिया जाता है। नाक और मुँह से बोलते के कारण इन्हें अनुनासिक कहा जाता है।
जैसे - हँस, फँस, धँस आदि।

→ अनुस्वार : जब किसी वर्ण का उच्चारण करते समय उसके ऊपर बिंदु [ं] लगाया जाता है।
जैसे - अंडा, हंस, कंस आदि।

अनुनासिक और अनुस्वार में अंतर :
अनुनासिक वर्णों को बोलते हुए हवा नाक और मुह दोनो से निकलती है, जबकि अनुस्वार के उच्चारण में हवा केवल नाक से ही बाहर आती है।
उदाहरण के लिए हम हँस और हंस शब्दों को ले सकते हैं। हँस शब्द हँसना क्रिया का बोध कराता है जबकि हंस एक पक्षी का नाम है। अर्थात हँस में अनुनासिक का प्रयोग किया गया है और हंस मे अनुस्वार का।

अभ्यास

प्र.1 सही के सामने (✓) और गलत (×) का चिह्न लगाइए-

(1) भाषा की छोटी-से-छोटी ध्वनि वर्ण कहलाती है। [✓]

(2) किसी भाषा के स्वर-समूह को वर्णमाला कहते हैं। [×]

(3) हिंदी की लिपी रोमन कहलाती है। [×]

Date
Page

(4) जिन वर्णों के उच्चारण मे किसी अन्य वर्ण की सहायता की आवश्यकता नहीं होती, वे स्वर कहलाते हैं। ✓

Scanned by TapScanner

शब्द	विलोम
22. पंडित	मूर्ख
23. देव	दानव
24. नवीन	प्राचीन

प्रर्यायवाची शब्द

1.	अमृत	सुधा, सोम, पीयूष, अमिय।
2.	असुर	दानव, दनुज, निशाचर, राक्षस।
3.	आँख	लोचन, दृग, नयन, नेत्र।
4.	आकाश	अंबर, गगन, नभ, व्योम।
5.	आग	अग्नि, पावक अनल, ज्वाला।
6.	इच्छा	अभिलाषा, कामना, लालसा।
7.	इन्द्र	मघवा, सुरपति, देवेन्द्र, सुरेश।
8.	ईश्वर	भगवान, परमात्मा, जगदीश, प्रभु।
9.	कपड़ा	वस्त्र, परिधान, पट, अंबर।
10.	कमल	अरविंद, कंज, जलज, पंकज नीरज
11.	गंगा	सुरसरि, भागीरथी मंदाकि, देवनदी
12.	गणेश	लंबोदर, गजानन, गणपति, विनायक।
13.	घर	गृह सदन गेह, निकेत, धाम।
14.	चंद्रमा	शशि, राकेश, सुधाकर, हिमांशु
15.	चतुर	कुशल, निपुण, दक्ष, पटु।

औपचारिक पत्र

- अपने बड़े भाई के विवाह मे सम्मिलित होने के लिए अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को अवकाश के लिए प्रार्थना पत्र लिखिए।

प्रधानाचार्य,
दिल्ली पब्लिक स्कूल
भिलाई, छत्तीसगढ़।

दिनांक : 22/8/19

विषय: बड़े भाई के विवाह के हेतु अवकाश के लिए आवेदन

महोदय

सविनय निवेदन है कि आगामि ~~20~~25 अगस्त को मेरे बड़े भाई का विवाह होना निश्चित हुआ है। विवाह की तैयारी तथा अन्य कार्यों मे सहयोग देने तथा विवाहोत्सव ~~निश्चित हुआ है। विवाह की तैयारी तथा~~ में सम्मिलित होने के लिए मेरा घर पर रहना आवश्यक है।

अतः आपसे प्रार्थना है कि मुझे 23 अगस्त से 26 अगस्त, 2019 तक तीन दिन का अवकाश देने करने की कृपा करें।

आपकी आज्ञाकारि शिष्या
आस्था सिंह
कक्षा : VI वर्ग- C

Scanned by TapScanner

जैसे ही मैं घर से निकली वर्षा होने लगी

कभी-कभी बड़ा अदभुत संयोग हो जाता है। उस दिन भी मैं खूब सज-सँवर कर अपने मित्र के जन्म-दिन समारोह में भाग लेने के लिए जा रहा था। तैयारी में वैसे भी बहुत देर हो चुकी थी और मित्र के फोन बार-बार आ रहे थे। मैंने जल्दी-जल्दी जूते पहने और घर से बाहर निकल गया। मुश्किल से अभी आधा किलोमीटर ही आगे बढ़ा था कि टप-टप करती हुई बड़ी-बड़ी बूँदो वाली तेज बौछारों ने मुझे कुछ ही क्षणों में भिगो दिया। इतना भी समय नहीं मिला कि दौड़कर सामने वाले पेड़ के नीचे तक पहुँच सकूँ। फिर भी मैं दौड़ी और उसके नीचे आ खड़ी हुई। किंतु तब तक इतना भीग गयी थी की उस हालत में मित्र के घर नहीं जाया जा सकता था। बड़ा क्रोध आया इस वर्षा पर जैसे पहले से ही मेरी प्रतीक्षा कर रही हो कि कब मैं बाहर निकलूँ और कब यह मुझे भिगोए !